शिव अवतरण

महाशिवरात्रि विशेषांक

ओमशान्ति मीडिया

नवयुग क्रांति का पावन संदेश-शिवरात्रि

जिस प्रकार मानव शरीर परमाणुओं से निर्मित है, गतिशील है और परिवर्तनशील है, लेकिन कहा जाता है कि योग उससे लगाएं जो अपरिवर्तनीय है, स्थिर है। इसीलिए मनुष्य आत्माओं से योग लगाने से शकिशाली नहीं बन सकते। लेकिन जो अपरिवर्तनीय है, निरंतर है, वो हम सबको अपने साथ जोड़कर स्थिर बना देता, अपने जैसा प्रकाशित कर देता। उस प्रकाशमान निराकार शिव को ही याद करने से हम सभी अमूल-चूल परिवर्तित होंगे। लेकिन परमात्मा शिव और शिवरात्रि के आधार से अद्भुत दृश्य हम सबके सामने बनेगा। वो आधार ही हम सबको निराधार बना देगा।

> जीरो का आदि और अंत नहीं होता। लेकिन यह अमूल्य है, सम्पूर्ण है। जीरो का अर्थ निरहंकारी भी है। इसमें न कुछ प्लस है और न कुछ माइनस, "बस है"। जो निरहंकारी है वही तो हम सबको निरहंकारी बनाएगा! इसी को भक्ति में निरहंकार और निराकारी शिव के रूप में भी कहते हैं। वही निराकारी शिव ब्रह्मा के मस्तक से प्रगट हो शिव शक्ति पैदा कर क्रांतिकारी परिवर्तन लाते हैं।

शिवरात्रि केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि परमात्मा शिव के अवतरण का पावन स्मृति दिवस है। यह याद दिलाता है कि जब संसार अज्ञान अंधकार और विकारों में पूरी तरह डूब जाता है, जब मनुष्य डायरेक्शन खो देता है- तभी परमात्मा निराकार शिव इस धरती पर अवतरित होते हैं। उनका आगमन किसी भौतिक शरीर से जन्म लेने जैसा नहीं बल्कि ज्ञान का प्रकाश फैलाने के लिए किसी साधारण मनुष्य तन में अवतरित होते हैं। यही कारण है कि इस दिन को शिवरात्रि कहा गया - रात्रि अर्थात् अंधकार का समय और शिव का आगमन उस अंधकार को मिटाने के लिए।

आत्मा में सुषुप्त - शक्ति को जागृत करना

परमात्मा का प्रथम कर्त्तव्य है - आत्मा की सुषुप्त शक्तियों को जगाना। मनुष्य स्वयं को देह समझने की भूल में इतना फँस गया है कि उसके मूल गुण- ज्ञान, सुख, शांति, आनंद, प्रेम, पवित्रता, शक्ति सब पीछे छूट गए। परमात्मा शिव आकर आत्मा को उसकी असली पहचान "मैं शुद्ध, अमर, दिव्य आत्मा हूँ" का स्मरण कराते हैं। इसी जागृति से आत्म शक्ति पुनः सक्रिया होती है और जीवन परिवर्तन की क्रांति शुरू होती है।

शिव माताओं-कन्याओं को दैवी स्वरूप प्रदान करते हैं

इसी युग में माताएं-कन्याएं जिन्हें समाज ने अपमानित, तिरस्कृत और कमज़ोर समझा- परमात्मा उन्हें विशेष सम्मान और शक्ति प्रदान करते हैं। शिव उन्हें मातृशक्ति बनाते हैं, उनके अंदर छिपी दिव्यता को उभारते हैं और उन्हें देवी शक्ति रूप में स्थापित करते हैं। यही कारण है कि शिवरात्रि के चित्रों में देवी-देवता और शक्ति रूपों की पूजा की जाती है, क्योंकि उनका आधार शिव ही है।

मानव की अज्ञानता और विकारों का अंधकार

आज का मनुष्य क्रोध, लोभ, अहंकार, भय और असुरक्षा में घिरा हुआ है। वह नहीं जानता कि क्यों दुःखी है, क्यों भटक रहा है, उसके कर्म उसे कहाँ ले जा रहे हैं, और जीवन का सही मार्ग क्या है। यह अज्ञान ही रात्रि है। जिसके कारण मनुष्य ठोकरें खा रहा है। जीवन ही बोझिल सा हो गया है। ऐसे में परमात्मा शिव का अवतरण इस अंधकार को ज्ञान-प्रकाश से समाप्त करने के लिए होता है।

सुख, शांति और समृद्धि का पर्व शिवरात्रि

शिवरात्रि वह पावन पर्व है जो आत्मा को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। यह हमें याद दिलाता है कि सच्ची समृद्धि बाहरी वस्तुओं में नहीं, बल्कि भीतर की शुद्धता, सकारात्मक विचारों, पवित्र भावनाओं और आत्म सशक्तिकरण में है। परमपिता शिव की याद में किया गया है राजयोग, मन को गहराई से शांत कर देता है। यह शांति बाहरी वातावरण पर निर्भर नहीं होती, बल्कि आत्मा की स्थिर अवस्था से उत्पन्न होती है। शिवरात्रि पर्व से हमें सीख मिलती है कि वास्तविक प्रकाश भीतर है और वास्तविक परिवर्तन भी भीतरी है। जब आत्मा दिव्य शक्ति से जुड़ती है तो जीवन में शांति, समृद्धि और सद्भाव स्वतः प्रकट होते हैं।

शिवरात्रि परमात्म अवतरण की यादगार

परमात्मा के ध्यान से ही आत्मा में दिव्य गुण और शक्तियां आती हैं, हमारा आत्मबल बढ़ता है क्योंकि परमात्मा ही सभी मनुष्य आत्माओं के परमपिता हैं। सत्-चित-आनंद स्वरूप हैं लेकिन आज हम अपने स्वरूप को भूल गये हैं। परमात्मा शिव जब धरा पर आते हैं, जिसकी यादगार हम महाशिवरात्रि के रूप में मनाते आये, ब्रह्माकुमारी बहनें इसका आध्यात्मिक रहस्य सिखाती हैं कि कैसे हम शांति, सुख और आनंद से रहें। हमारे अंदर जो अमृत है उसका मंथन करना है और मंथन करके हमारे अंदर जो विष है उसे फेंककर अमृत को धारण करना है। जब सभी अमृत को धारण करेंगे तो जल्दी ही इस धरा पर स्वर्णिम युग आयेगा। परमपिता परमात्मा की दिव्य अनुभूति मैंने अपने जीवन में खुद महसूस की है। मुझे उनका हर पल साथ महसूस होता है। मैं उसके सानिध्य में आज भी अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त 3.30 बजे से एक घंटा परमात्मा शिव का ध्यान लगाती हूँ। आप भी इस महाशिवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्य को समझ अपने जीवन में सुख, शांति लायें, ये मेरी शुभकामना है।

- महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु, भारत।

समय है ज्ञान और योग के इनोवेशन का

अमृत काल का ये समय हमारे ज्ञान-योग और इनोवेशन का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है जिसकी जड़ें प्राचीन परम्पराओं और विरासत से जुड़ी होंगी। मैं जानता हूँ ब्रह्माकुमारीज़ का प्रभाव पूरे विश्व में है। मैं देश के संकल्पों के साथ, देश के सपनों के साथ निरंतर जुड़े रहने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ परिवार का अभिनंदन करता हूँ। अमृत और अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता है। जिसका विस्तार आधुनिकता के आधार पर अपनी संस्कृति और सभ्यता के साथ होगा। इन प्रयासों में ब्रह्माकुमारीज़ जैसी आध्यात्मिक संस्थाओं की बड़ी भूमिका है। राष्ट्र की प्रगति में ही हमारी प्रगति है। शिवरात्रि के महापर्व पर मैं सभी को कोटि-कोटि बधाई देता हूँ।

- माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, भारत।